# उदयसागर झील


| क्र.सं. | विवरण | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|
| 1. | प्रस्तावना | 257 |
| 2. | झील का स्वरूप एवं उद्देश्य<br>उदयसागर झील–इतिहास के पृष्ठों से | 258–259 |
| 3. | झील के ओवरफ्लो का सुन्दर स्वरूप | 260 |
| 4. | झील पर महल एवं वर्तमान स्थिति | 261 |
| 5. | उदयसागर पाल, मन्दिर एवं रखरखाव | 262 |
| 6. | उदयसागर झील का पूर्ण स्वरूप एवं उसकी पुकार | 263 |
| 7. | पाल का वर्ष 2016 का परिदृश्य, पाल पर स्थित पम्प हाउस, विद्युत खंभे एवं ट्रांसफॉर्मर का अव्यवस्थित स्वरूप, पाल पर केन्टिन, पानी की टंकी के स्थान परिवर्तन की आवश्यकता, पाल के उत्तरी छोर का विकास अपेक्षित | 264 |
| 8. | पाल, उद्यान एवं नव–निर्माण | 265 |
| 9. | समीक्षा एवं अनुशंसाएँ – जल भंडारण क्षमता में वृद्धि संभव, झील की गहराई में वृद्धि, मत्स्य पालन एवं जैव विविधता संरक्षण | 266 |
| 10. | जल–क्रीड़ा, नौकायन एवं तैराकी प्रशिक्षण हेतु संभावित स्थल, आयड़ नदी–उदयसागर जल उपचार एवं सुधार परियोजना, ग्रीन ब्रिज टेक्नोलॉजी, उदयसागर एवं सिंचाई क्षेत्र | 267–268 |
| 11. | उदयसागर में टापू, रेफल्स होटल एण्ड रिसोर्ट्स | 269 |
| 12. | उदयसागर झील रामसर वेटलेण्ड के लिए सर्वोत्तम, उदयसागर वेटलेण्ड घोषित होने पर इन पर रहेगी रोक, वेटलेण्ड घोषित होने पर ये काम हो सकेंगे–अनुमति के साथ, उदयसागर झील : पेयजल का नया स्रोत, नये उदयपुर की स्थापना, अभिव्यक्ति | 270–271 |


## बैक वाटर क्षेत्र में जल भराव रोकने के प्रयास

वर्ष 2022 में हुई भारी वर्षा के कारण आयड़ नदी में अथाह जल आवक से 24 फीट क्षमता की उदयसागर झील का जल स्तर 27.4 फीट तक पहुंच गया। इससे इसके बैक वाटर क्षेत्र के 5 मुख्य गाँव मटून, लकड़वास, खरबड़िया, कानपुर, खेगरों की भागल आदि की कृषि भूमि/आवासीय क्षेत्र का जल स्तर भी बढ़ गया। वर्ष 1973 एवं 2006 में भी ऐसे ही हालात बने थे। वजह यह है कि बाँध की पाल की ऊँचाई 60 फीट है और निकास का रास्ता मात्र 15 से 20 फीट चौड़ा है। वर्ष 2022 में दोनों गेट 8 फीट खोलने के बावजूद ऊपर से पानी बहता रहा। इसलिए इस झील के नाले की चौड़ाई बढ़ाने एवं अधिक गेट लगाने की महत्ती आवश्यकता है। यह झील चारों ओर से अरावली की पहाड़ियों से घिरी हुई है। पश्चिम–दक्षिण की ओर एक से दो निचले स्थानों एवं आयड़ नदी के उदयसागर में प्रवेश स्थल से कुछ पानी बहकर इन गांवों तक पहुंच जाता है। अतः इन स्थानों पर मजबूत दीवार पाल के रूप में निर्मित की जानी चाहिये। इससे इस झील की जल संग्रहण क्षमता में वृद्धि के साथ उक्त गाँवों को बाढ़ से भी बचाया जा सकेगा।

# उदयसागर झील

**प्रस्तावना** : मानव निर्मित यह झील बेड़च नदी पर उदयपुर से 13 कि.मी. दूर दक्षिण–पूर्व में स्थित है। इस झील का निर्माण महाराणा उदयसिंह ने वर्ष 1559–1562 के मध्य करवाया। आयड़ नदी एवं उदयपुर शहर स्थित झीलों से भराव उपरान्त एवं बाढ़ से बहते पानी को शहर के पास रोक कर सिंचाई के मुख्य स्रोत के रूप में इसे विकसित किया गया जो पिछले 450 से अधिक वर्षों से अनवरत रूप से अन्न उत्पादन क्षेत्र में सहयोगी है। उदयसागर झील की पाल दो पहाड़ों के मध्य 304.4 मीटर लम्बी एवं 152 मीटर ऊँची व चौड़ी है। झील की लम्बाई 4 कि.मी. एवं चौड़ाई 2.5 कि.मी. तथा आवरण क्षेत्र 10.5 वर्ग कि.मी. में फैला हुआ है, जिसकी अधिकतम् गहराई 9 मीटर है। उदयपुर शहर के आयड़ नदी के माध्यम से बहते गन्दे पानी से यह झील बहुत हद तक प्रदूषित होती गई। इसका जल पेयजल के रूप में उपयोग नहीं किया जा सकता है।

| उदयसागर झील | |
|---|---|
| स्थिति | उदयपुर से पूर्वी दिशा में |
| निकटस्थ गांव/तहसील | बिछड़ी, गिर्वा |
| देशान्तर | 73°47'00'' पूर्वी देशान्तर |
| अक्षांश | 24°33'00'' उत्तरी अक्षांश |
| नदी/नाला | आयड़ नदी |
| निर्माण समाप्ति वर्ष | 400 वर्ष पूर्व |
| बाँध का प्रकार : कृत्रिम शुद्ध मीठे पानी की झील, मिट्टी के बाँध के साथ दोनों ओर की दीवार | |
| शुद्ध जलग्रहण क्षेत्र | 196.80 वर्ग किलोमीटर |
| सकल जलग्रहण क्षेत्र | 479.10 वर्ग किलोमीटर |
| औसत वार्षिक जल आवक | 22.17 एमसीएम |
| सकल जल भराव क्षमता | 31.14 एमसीएम |
| शुद्ध जल भराव क्षमता | 27.60 एमसीएम |
| पूर्ण जलाशय स्तर | 168.15 मीटर |
| अधिकतम् जल स्तर | 168.89 मीटर |
| टैंक बंध स्तर | 170.57 मीटर |
| सेल स्तर | 153.61 मीटर |
| पूर्ण टैंक गेज | 7.31 मीटर/24 फीट |
| स्तर–जीटीएस/आर्बिटरी | आर्बिटरी |
| अधिकतम् लम्बाई | 4.00 किलोमीटर |
| अधिकतम् चौड़ाई | 2.50 किलोमीटर |
| सतही क्षेत्रफल | 10.5 वर्ग किमी. |
| औसत गहराई | 5.40 मीटर |
| अधिकतम् गहराई | 9.00 मीटर |
| समुद्रतल से ऊँचाई | 551.69 मीटर |
| अधिशेष जल निकास व्यवस्था : गेटेड स्पीलवे | |
| – डिजाइन अधिकतम् प्रवाह | 1420.37 क्यूमेक |
| – वीयर का प्रकार व लम्बाई | वेस्ट वीयर, 975 मीटर |
| – मुख्य बहाव | बेड़च नदी |

उदयसागर झील की ऐतिहासिक पाल एवं उसका विशाल स्वरूप

झील पर बने बाँध का ऐतिहासिक पक्ष भी बहुत महत्त्वपूर्ण है। इस पर वर्ष 1573 में सम्राट अकबर के प्रतिनिधि राजा मानसिंह एवं महाराणा प्रताप के प्रतिनिधि उनके पुत्र कुँवर अमर सिंह के मध्य ऐतिहासिक वार्ता हुई। वार्ता असफल होने की परिणीति 1576 में हल्दीघाटी युद्ध के रूप में हुई। वेटलेण्ड अधिनियम के तहत इसका क्षेत्रफल 500 हेक्टयर से अधिक होने से इसे रामसर वेटलेण्ड के रूप में चिह्नित किया जाना चाहिये जिससे यहाँ आने वाले पर्यटकों की संख्या में वृद्धि के साथ इसके रखरखाव एवं विकास पर अधिक ध्यान दिया जा सकेगा।

उदयसागर झील हमें विरासत में मिली सबसे महत्त्वपूर्ण एवं प्रथम झील है। यह पिछले काफी समय से उपेक्षित रही। इस पर स्थित महल एवं मन्दिर खण्डहर होते चले गये। यह मात्र सिंचाई एवं हिन्दुस्तान जिंक संयंत्र के लिए ही उपयोगी रही। पर्यटन की दृष्टि से भी इसका महत्त्व नगन्य रहा है। इस पर नियमित रूप से अतिक्रमण होते रहे। इसके आकार को कम करने का प्रयास हुआ एवं वर्तमान में भी हो रहा है। विरासत में मिली इतनी विशाल एवं महत्त्वपूर्ण झील का निर्माण वर्तमान में संभव नहीं है, हमें केवल इसके विरासत में मिले स्वरूप को ही संरक्षित करना है, यह हमारी प्राथमिकता होनी चाहिये।

**झील का स्वरूप एवं उद्देश्य** : उदयपुर शहर के संस्थापक महाराणा उदयसिंह ने उदयसागर झील का निर्माण मेवाड़ जल विभाजन रेखा से आने वाले समस्त जल को संरक्षित करने के उद्देश्य से किया था। महाराणा इस झील के माध्यम से अपनी नई राजधानी की मूलभूत आवश्यकताएँ, पर्याप्त जल, प्रचुर मात्रा में खाद्य सामग्री आदि की उपलब्धता को सुनिश्चित करना चाहते थे। गोगुन्दा एवं कुंभलगढ़ की पहाड़ियों से आने वाले पानी के साथ फतहसागर व पिछोला तंत्र के लबालब होने के बाद जो अतिरिक्त पानी छोड़ा जाता है, वह आयड़ नदी के माध्यम से उदयसागर झील में समाहित होता है।

इस झील का पानी ऊँचे बाँध से रुका हुआ है। यह बाँध आहाड़ सभ्यता की प्रतीक आयड़ नदी के बेड़च जल ग्रहण क्षेत्र के प्रवेश स्थल पर सर्वोत्तम उपयुक्त निचले क्षेत्र में स्थित है। यहाँ अरावली पहाड़ियों की श्रृंखला में दो पहाड़ियों के मध्य स्थित दर्रे पर 304.4 मीटर लम्बी, 152 मीटर ऊँची व चौड़ी पाल बनाकर इस झील का निर्माण किया गया। इस झील की विशेषता है

**उदयसागर झील की पाल का ऐतिहासिक स्वरूप – पाल का रखरखाव उच्च स्तरीय था।**

**आयड़ नदी – जलग्रहण क्षेत्र, उद्गम स्थल, मुख्य तालाब, झीलें, नाले एवं अन्य स्रोत**

## उदयसागर झील : इतिहास के पृष्ठों से ...

देबारी घाटी के दक्षिण में उदयपुर से लगभग 13 कि.मी. दूर वि.सं. 1616 (ई.सं. 1559) में उदयपुर महाराणा उदयसिंहजी का बनाया हुआ एक विस्तीर्ण और परमरम्य उदयसागर नामक तालाब स्थित है। यह वि.सं. 1619 (ई.सं. 1562) में तैयार हुआ। इसकी प्रतिष्ठा वि.सं. 1622 बैसाख शुक्ल 3, गणगौर (ई.सं. 1565, 4 अप्रैल) में महाराणा उदयसिंहजी ने अपने हाथों से अपनी रानियों की उपस्थिति में, इसकी परिक्रमा पूर्ण कर की तथा इसका नाम उदयसागर रखा। उदयसागर के निर्माण में 1,74,781 रुपये का व्यय हुआ। इसके उद्घाटन के अवसर पर ब्राह्मण भोजन, दान–पुण्य में अन्न, कपड़ा, मोती, हाथी, घोड़े इत्यादि पर 1,36,316 रुपये व्यय हुए। इस प्रकार निर्माण एवं उद्यापन दोनों को मिलाकर 3,11,097 रुपये खर्च हुए।

महाराणा उदयसिंहजी ने मेवाड़ की राजधानी चित्तौड़ से, भौगोलिक दृष्टि से अधिक सुरक्षित स्थान उदयपुर में स्थानान्तरित कर इसे व्यवस्थित रूप से बसाया। वह अपनी नई राजधानी की मूलभूत आवश्यकताएँ तथा पर्याप्त जल, प्रचुर मात्रा में खाद्य सामग्री आदि की उपलब्धता निश्चित करना चाहते थे। इस प्रयोजनार्थ उन्होंने पूर्व निर्धारित योजना के अनुसार उदयसागर का निर्माण करवाया। इसके अतिरिक्त इस निर्माण से शत्रु सेना का मार्ग केवल देबारी घाटे से ही रह गया एवं इसे नगर की प्रथम सुरक्षा पंक्ति बनाया।

इतिहासविज्ञ के अनुसार उदयसागर निर्माण में प्रमुख बाधा भूमि अधिग्रहण की थी क्योंकि बाँध निर्माण के लिए चयनित स्थान देवड़ा सामन्तों की जागीर थी। वे किसी भी कीमत पर अपने पट्टे की भूमि छोड़ना नहीं चाहते थे। देवड़ा सरदारों को समझाया गया कि जलाशय निर्माण से कृषि उत्पादन, पशुओं के लिए पर्याप्त जल आदि के कारण उनकी आमदनी में अप्रत्याशित वृद्धि होगी। उन्हें यह आश्वासन भी दिया गया कि उनकी भूमि जलमग्न नहीं होगी। बाँध में जल–निकासी के स्रोत रखे जायेंगे ताकि एक निश्चित सीमा से अधिक जलस्तर नहीं बढ़े। ऐसे आश्वासन के पश्चात् देवड़ा सरदार भूमि देने का सहमत हो गये।

उदयसागर तालाब की पाल दो पहाड़ों के बीच 304.4 मीटर लम्बी, 152 मीटर ऊँची व चौड़ी है जिसमें 42.56 मीटर पानी के भीतर पक्की बनी हुई है। बाँध की औसत चौड़ाई 59.21 मीटर है। यह तालाब बहुत बड़ा है, उसकी लम्बाई 4 कि.मी. एवं चौड़ाई 3.2 कि.मी. और पूरा भरने पर 33.78 कि.मी. के घेरे में इसका फैलाव होता है। इस तालाब में 478 वर्ग कि.मी. भूमि का जल समावेशित होता है। इसमें गोगुन्दा एवं कुम्भलगढ़ के पहाड़ों से पानी आता है। इस झील के चारों ओर पहाड़ है। इस झील का नाला बांध के दक्षिण पहाड़ को काटकर बनाया गया, जिस पर से पानी कई फीट की ऊँचाई से गिरता है और वहीं आगे जाकर बेड़च नदी के नाम से प्रसिद्ध हुआ है। इसका नाला मोरी के रूप में सदा बहता रहता था। इस नाले की गहराई 32.89 मीटर और चौड़ाई 7.89 मीटर है। महाराणा फतहसिंहजी ने नाला कटाई व बँधाई पर 9890 रुपये खर्च किये।

बाँध के पीछे महाराणा जगतसिंहजी के बनवाये हुए महल भग्नावशेष के रूप में खड़े हैं। ये महल उदयसागर के नाले की छटा देखने को बनवाये गए थे, परन्तु बांध के पिछवाड़े में होने से तालाब का दृश्य दिखाई नहीं पड़ता था, इसलिए महाराणा फतहसिंहजी ने पश्चिमी तट पर मेड़ी मगरी नामक एक छोटी सी मगरी पर आलीशान दो–मंजिला महल बनवा कर उसका नाम उदयनिवास रखा। वर्तमान में इसे राजकीय सम्पत्ति के रूप में राज्य सरकार ने भारतीय स्काउट एवं गाईड, उदयपुर शाखा को अपनी गतिविधियाँ संचालित करने हेतु दिया हुआ है। इस झील के आस–पास की पहाड़ियाँ घने जंगल से ढकी होने के कारण उन पर शिकार के लिए ओदिया (मूल) बनी हुई हैं। यह बाँध इतना मजबूत बना हुआ है कि वि.सं. 1932 (ई.सं. 1875) में जब अतिवृष्टि हुई तब बांध के ऊपर

की पाल पर बने बाँध की औसत चौड़ाई 59.21 मीटर है। साथ ही यह 42.56 मीटर पानी के भीतर पक्का बना हुआ है। यह बाँध इतना मजबूत बना हुआ है कि वि.सं. 1932 (ई.सं. 1875) में जब अतिवृष्टि हुई, तब बाँध के ऊपर से पानी छलक गया परन्तु बाँध को कुछ भी नुकसान नहीं पहुँचा।

यह झील बहुत विशाल थी। इसकी लम्बाई 4 कि.मी. एवं चौड़ाई 3.2 कि.मी. और पूर्ण भर जाने पर पानी का फैलाव 33.78 वर्ग कि.मी. घेरे में होता था। इसका नाला मोरी के रूप में सदा बहता रहता था। इस झील के निर्माण से शत्रु सेना का मार्ग केवल देबारी घाटे से निश्चित किया गया एवं इसे नगर की प्रथम सुरक्षा पंक्ति के रूप में मान्यता मिली।

महाराणा फतहसिंह जी के काल तक इस झील का पानी वर्तमान में राणा प्रताप नगर रेलवे स्टेशन के पास टकराता था। इसी कारण आयड़ नदी के इस स्थान को ठोकर चौराहा कहा जाता है।

महाराणा फतहसिंह जी ने इस पाल के ओवरफ्लो स्थल को कटवाकर पानी की व्यवस्थित निकासी के लिए दो गेट लगाये थे। इसकी जल भराव क्षमता को घटाकर वर्तमान 10.5 वर्ग कि.मी. तक सीमित कर दिया गया, जिससे इसकी चौड़ाई 3.2 कि.मी. से घटकर 2.50 कि.मी. रह गई, क्योंकि उस समय इस विशाल जल राशि का कोई विशेष उपयोग नहीं था। आज के सन्दर्भ में उदयपुर शहर की पेयजल एवं औद्योगिक जल आवश्यकता को देखते हुए इस झील में जल संग्रहण अति महत्त्वपूर्ण हो गया है। इसकी जल ग्रहण क्षमता के अभिवर्द्धन पर विचार–विमर्श अवश्य किया जाना चाहिये।

वर्तमान में इस झील का पूर्ण भराव स्तर 24 फीट है जो कई वर्षों में कभी–कभार ही पहुँचता है किन्तु वर्ष 1973 में विपुल वर्षा के कारण यह स्तर 36 फीट (एच.एफ.एल.) तक पहुँचा था। इससे स्पष्ट हो जाता है कि पूर्व निर्मित पाल की सुदृढ़ता 36 फीट तक जल स्तर

**झील के पूर्ण भराव पर भी पाल की क्षमता अतिरिक्त जल भण्डारण के लिए सक्षम पाल का उच्च स्तरीय रखरखाव आवश्यक है।**

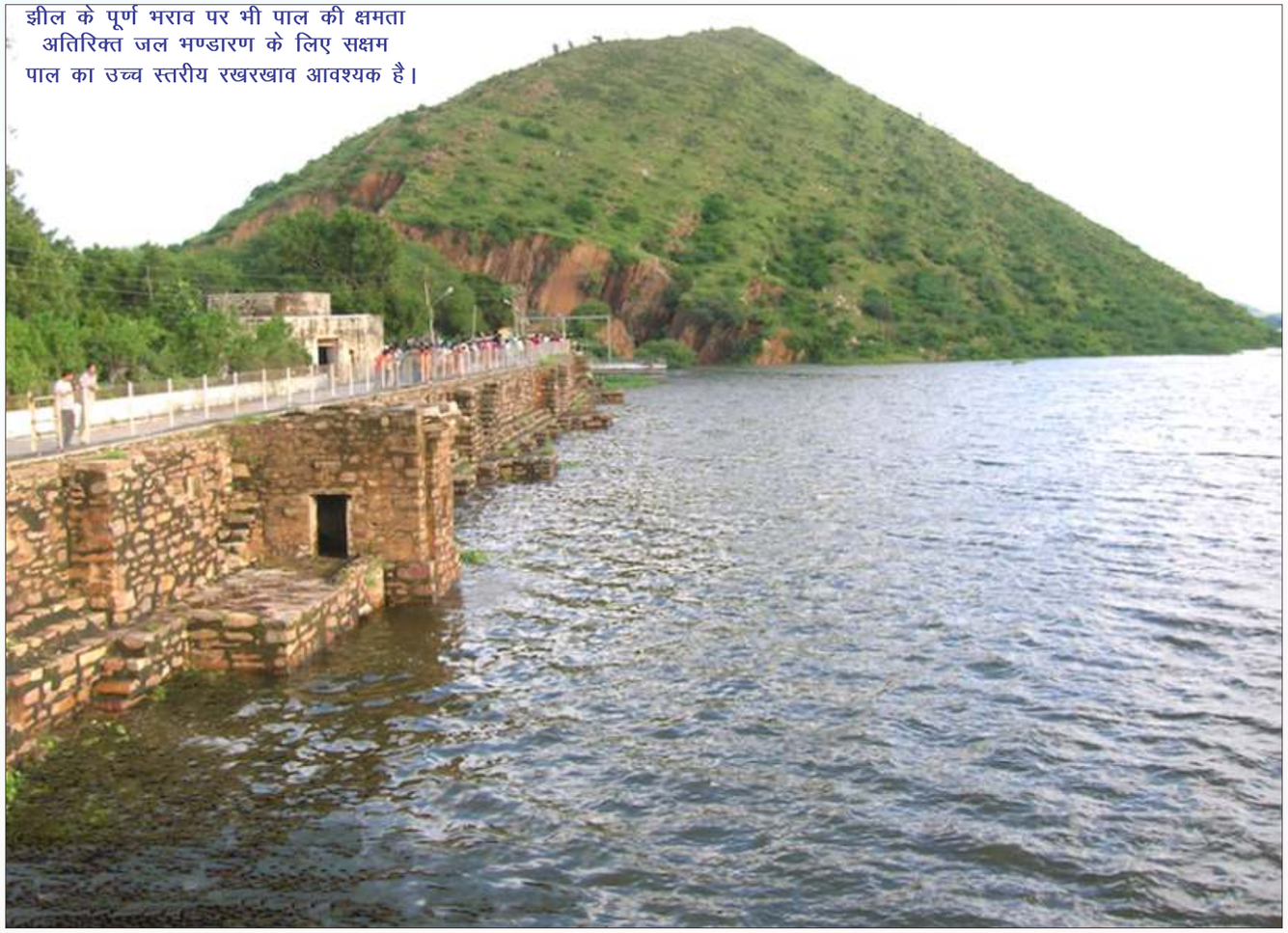

**दो अरावली पर्वत शृंखलाओं के मध्य निर्मित उदयसागर पाल एवं सामने संगृहीत विशाल जलराशि**

सहन करने में सक्षम है। अतः इस भराव क्षमता को 2 से 4 फीट तक सहजता से बढ़ाया जा सकता हैं साथ ही इसमें देवास–प्रथम एवं द्वितीय और भावी देवास–तृतीय एवं चतुर्थ परियोजना से प्राप्त अधिशेष जल को भी समाहित किया जा सकता है। इसके विपरीत इसकी भराव क्षमता को अप्रत्यक्ष रूप से घटाने का प्रयास किया जा रहा है। इसमें अतिरिक्त पानी की आवक होने पर झील से पानी की निकासी सहज बनाने के लिए दो गेट के स्थान पर चार गेट लगाये जायेंगे। ये गेट पुराने गेट से बड़े होंगे। गेट से चैनल तक की चौड़ाई भी बढ़ाई जायेगी। बीच में आने वाली चट्टानों को व्यवस्थित कर वर्तमान में मौजूदा ऊँचाई से 8 फीट नीचे तक चार गेट लगाये जायेंगे। पास ही मौजूदा मगरी को काटकर ओटा बनाया जायेगा। बाँध में जल निकासी की ऊँचाई कम करने से उदयसागर के डूब क्षेत्र में आने वाली जमीन तो डूबने से शायद बच जायेगी, परन्तु यह उदयपुर की भावी आवश्यकताओं के हित में नहीं होगा।

पाल का वर्तमान परिदृश्य अति कुरुप है। ऐसी स्थिति में इसका उच्च स्तर का रखरखाव, पर्यावरण संरक्षण, उद्यान निर्माण सुधार आदि हेतु सिंचाई विभाग, नगर विकास प्रन्यास, हिन्दुस्तान जिंक या अन्य किसी संस्थान का सहयोग लिया जावे तो यह जनहित एवं विरासत संरक्षण में लिया गया ठोस कदम साबित होगा।

पानी छलक गया परन्तु बांध को कुछ भी नुकसान नहीं पहुंचा। यहाँ निर्मित मन्दिरों को मुस्लिम आक्रमणकारियों ने ध्वस्त कर दिया था।

वर्तमान में उदयसागर से प्रतिदिन 55 लाख लीटर जल हिन्दुस्तान जिंक स्मेल्टर, जे.के. सीमेन्ट आदि कारखानों तथा लकड़वास एवं आस–पास स्थित अनेक गाँवों में 48.52 प्रतिशत पानी सिंचाई के लिए प्रयुक्त होता है। इस जलाशय से सकल 12583 एकड़ जमीन की सिंचाई होती है।

महाराणा प्रतापसिंहजी प्रथम के वि.सं. 1628 (ई.सं. 1572) में गद्दीनशीन होने के थोड़े ही समय बाद बादशाह अकबर तो गुजरात की तरफ गये और आमेर के कुँवर मानसिंहजी को उदयपुर भेजा, वह डूंगरपुर होते हुए उदयपुर आये। महाराणा ने उनकी खातिर की और उनके लिए इसी उदयसागर की पाल पर गोठ तैयार करवाई। आप स्वयं तो न गए परन्तु कुँवर अमरसिंहजी को उनकी खातिर करने और जिमाने हेतु भेज दिया। कुँवर मानसिंहजी भोजन करने बैठे और महाराणा न आए तब पूछा कि महाराणा क्यों नहीं आए? कुँवर अमरसिंहजी ने उत्तर दिया कि महाराणा के पेट में दर्द है इस कारण नहीं आए। मानसिंहजी समझ गए कि मेरी भुआ अकबर बादशाह को ब्याही गई, इस कारण महाराणा मुझसे घृणा करते हैं और कहा कि अर्ज कर देना कि आपके पेट की तकलीफ का औषध मैं जानता हूँ। अब तक तो मैं आपकी भलाई में रहा, अब आप खूब होशियार रहना। महाराणा ने कहलाया कि यदि आप अपने बल से आवेंगे तो मालपुरे तक पेशवाई करूंगा और अपने फूफा (अकबर बादशाह) के बल से आवेंगे तो जहां मौका मिलेगा वहीं पेशवाई करूंगा। कुंवर मानसिंहजी ने अकबर बादशाह के पास जाकर अपने अपमान का सब हाल कहा। इधर महाराणा ने उदयसागर की पाल जहां वह भोजन करने बैठे वह जगह खुदवा कर गंगा जल से धुलवाई और चांदी, सोने के बरतन उनके काम में आए वे सब तालाब में फिकवा दिए। इसी द्वेष पर वि.सं. 1633(ई.सं. 1576) में अकबर ने मानसिंहजी के सेनापतित्व में सेना भेजी और प्रसिद्ध हल्दीघाटी का युद्ध हुआ, जिसमें मानसिंहजी की सेना भाग निकली।

वि.सं. 1764 (ई.सं. 1707) में बादशाह शाहआलम बहादुर शाह ने आमेर और जोधपुर खालसे कर लिये तब आमेर महाराज सवाई जयसिंहजी और जोधपुर के महाराज अजीतसिंहजी बादशाह के साथ नर्मदा तक गए परन्तु अपने राज्य पीछे न मिलने से निराश होकर सीधे उदयपुर महाराणा अमरसिंहजी द्वितीय के पास आए, उस वक्त प्रथम मिलाप महाराणा का इन दोनों रईसों से इसी तालाब की पाल के पीछे के महलों में हुआ, बाद में उदयपुर ले गए और बड़ी खातिरी से रखे। मुगलों को बेटियां देने के कारण महाराणा ने इन राजा लोगों के साथ सम्बन्ध बंद कर दिया था, वह पीछा जारी हुआ और अहदनामा हुआ कि मेवाड़ की लड़की छोटी रानी होवे तो भी पटरानी होवे और उसका लड़का छोटा होवे तो भी गद्दी पर बैठे। इसके बाद महाराणा ने दोनों रईसों के साथ अपनी फौज भेज कर उनके राज्य पर से बादशाही अफसरों को निकाल दिया।

नगर की बढ़ती आबादी के लिए आवश्यक जलापूर्ति हेतु उदयसागर बाँध की ऊँचाई बढ़ाने की महाराणा सज्जनसिंहजी की प्रस्तावित योजना (1884 ई.सं. में) मात्र 25 वर्ष की आयु में ही उनकी असामयिक मृत्यु के कारण साकार रूप नहीं ले सकी। तत्पश्चात् उनके उत्तराधिकारी महाराणा फतहसिंहजी ने इसके स्थान पर उदयपुर के उत्तरी दिशा की घाटी में एक जलाशय विकसित करने को प्राथमिकता देते हुए उन्होंने देवाली तालाब के छोटे बाँध को फतहसागर के विशालकाय पक्के बाँध के रूप में परिवर्तित कराया (1889 ई.)। इसी प्रकार मदार प्रथम तथा मदार–द्वितीय का निर्माण भी महाराणा फतहसिंहजी ने कराया ताकि एक नहर के माध्यम से फतहसागर में अतिरिक्त पानी की आवक हो सके। ग्रामीण जरूरतों के लिए भी उन्होंने आस–पास के क्षेत्रों में कई छोटे बाँधों का निर्माण करवाया।

**झील के ओवरफ्लो का सुन्दर स्वरूप** : उदयसागर झील के निर्माण के बाद पूर्ण जल भराव स्तर पर अतिरिक्त पानी नाले से मोरी के रूप में ऊँचाई से सदा बहता रहता था, जो काफी सुन्दर स्वरूप में परिलक्षित होता था। महाराणा फतहसिंहजी ने इसके नाले की कटाई व बँधाई करवाकर पानी की निकासी के लिए दो गेट लगवाये थे। झील के पूर्ण भराव स्तर पर गेट ऊँचे करने पर गेट से निकलती हई इस विशाल जलराशि के ओवरफ्लो के नयनाभिराम दृश्य को देखने के लिए उदयपुर एवं आसपास के नागरिक एवं पर्यटक बड़ी संख्या में आते हैं। इस दृश्य को देखने हेतु बनाया गया स्थान अत्यन्त अव्यवस्थित एवं लघु होने के साथ इसका निर्माण भी उच्च स्तरीय नहीं है। झाड़ियों एवं गन्दगी से अटा हुआ है। इसे भव्य रूप से विकसित करने की आवश्यकता है। पूर्व महाराणाओं ने इस ओवरफ्लो स्थल के मनोहारी दृश्य के सिंहावलोकन हेतु दो मंजिला महल बनवाया था जो समुचित रखरखाव के अभाव में खण्डहर में परिवर्तित हो गया है। इस झील का ओवरफ्लो स्वरूप अद्वितीय है जिसके प्रस्तावित परिवर्तन के अन्तर्गत दो के स्थान पर चार गेट वर्तमान ऊँचाई से 8 फीट नीचे लगाये जाने हैं, इससे ऊँचाई से गिरते ओवरफ्लो पानी के सुन्दर दृश्य दृष्टिगत नहीं हो पायेंगे तथा स्थानीय एवं विदेशी पर्यटकों के आकर्षण पर भी विपरीत प्रभाव पड़ेगा।

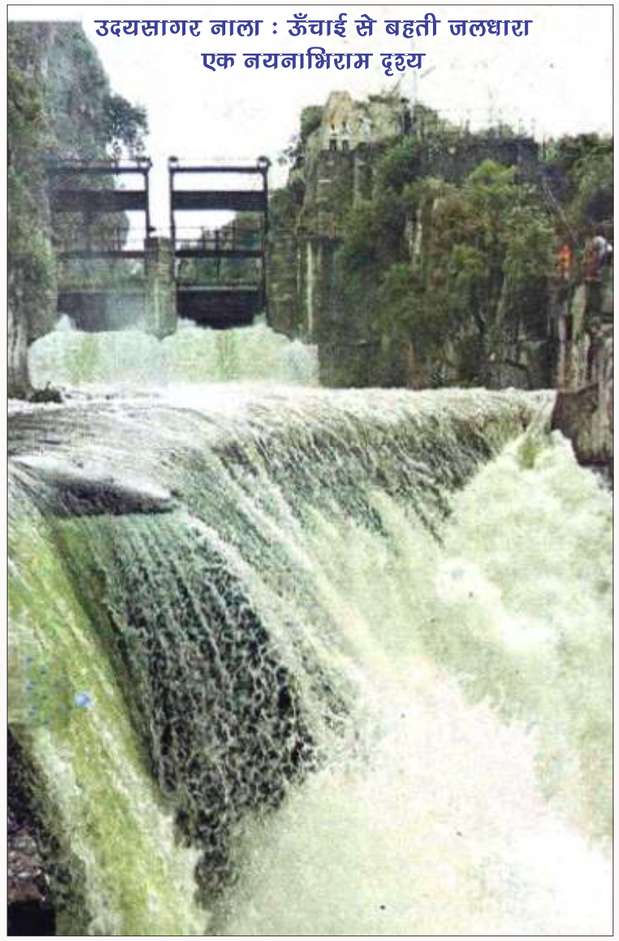
उदयसागर नाला : ऊँचाई से बहती जलधारा एक नयनाभिराम दृश्य

उदयसागर पहाड़ के मध्य निर्मित मोरी

⇦अधिकतम् जल भराव स्तर (वर्ष 1973)

उदयसागर नाले से तीव्र वेग एवं दबाव से गिरता पानी

नाले के सुन्दर दृश्यों के अवलोकन हेतु निर्मित महल

उदयसागर संपूर्ण नाला – विभिन्न स्तरों पर पानी के प्राकृतिक बहाव का अति आकर्षक स्वरूप

**झील पर महल एवं वर्तमान स्थिति** : उदयसागर झील की विशाल पाल के पीछे महाराणा जगतसिंह जी द्वारा बनवाया दो मंजिला महल भग्नावशेष के रूप में खड़ा हैं। यह महल उदयसागर के नाले की छटा देखने हेतु बनवाया गया था। इसका नाला मोरी के रूप में सदा बहता रहता था एवं पानी कई फीट की ऊँचाई से गिरने से इसका दृश्य अति मनोहारी लगता था। वर्तमान में यह महल जर्जर अवस्था में विविध खरपतवार, कंटीली झाड़ियों एवं जंगली पौधों से अटा पड़ा है। जगह–जगह से प्लास्टर गिर रहा है। समुचित देखभाल, सुगम रास्ता एवं पर्याप्त सुरक्षा व्यवस्था उपलब्ध हो तो यह ऐतिहासिक महल पर्यटकों के लिए दर्शनीय बन सकता है।

महल बाँध के पीछे स्थित होने से विशाल झील का दृश्य सहज दिखाई नहीं पड़ता था, इसलिए महाराणा फतहसिंहजी ने झील के पश्चिमी तट पर मेड़ी मगरी नामक वृहद् परिसर की एक छोटी सी मगरी पर एक सुन्दर दो मंजिला महल बनवाकर उसका नाम उदयनिवास रखा। वर्षाकाल में इस झील की विशाल जल सतह, उठती लहरें, उस पर गिरती हुई पानी की बूँदे एवं विचरण करते हजारों बहुरंगी सुन्दर पक्षियों की अठखेलियों का अवलोकन एवं आनन्द लेने के लिए महाराणा एवं उनके परिवार यहाँ कुछ दिन प्रवास पर आते थे। आसपास की पहाड़ियों के घने जंगलों के मध्य बनी ओदियों से शिकार करने का भी प्रचुर आनन्द लेते थे।

वर्तमान में इसे राजकीय सम्पत्ति के रूप में राज्य सरकार ने भारत स्काउट एवं गाइड, उदयपुर शाखा को अपनी गतिविधियाँ संचालित करने हेतु दिया है। बड़े परिसर में स्थित यह महल खरपतवार एवं अवांछनीय पौधों से आच्छादित है। पूर्व महाराणाओं द्वारा बनाई गई ये ऐतिहासिक धरोहरें प्रशासन की उपेक्षा से खण्ड–खण्ड होकर अपनी पहचान खोने के कगार पर है। इसके समुचित संरक्षण, नियमित उपयोग व रखरखाव की महत्ती आवश्यकता है।

विरासत में मिले महल, जिन्हें दर्शनीय बनाए रखना ऐतिहासिक प्राथमिकता है

पुरातन महल, जर्जर अवस्था में – इनका जीर्णोद्धार पर्यटन की दृष्टि से अत्यावश्यक

पुरातन महलों से दृष्टिपात होती नाले की कलरवमय विशाल जलराशि

विरासत में प्राप्त उदयसागर की पाल एवं प्राचीन मन्दिरों का रखरखाव पर्यटकों के आकर्षण हेतु अत्यावश्यक

मेड़ी मगरी से उदयसागर की अथाह जलराशि का सुरम्य स्वरूप

**उदयसागर पाल, मन्दिर एवं रखरखाव** : उदयसागर का निर्माण करीब 450 वर्षों पूर्व हुआ एवं इस दीर्घकाल के दौरान पाल पर विभिन्न मान्यताओं के मन्दिर बने, जो पाल के दक्षिणी, मध्य, उत्तर एवं पूर्वी छोर पर स्थित है। इनमें से कुछ को मुस्लिम आक्रमणकारियों ने ध्वस्त कर खण्डहर में परिवर्तित कर दिया था। पाल के दक्षिणी छोर एवं नाले की मोरी के किनारे पर माँ कालिका मन्दिर समुचित रखरखाव के साथ अपनी धार्मिक प्रभावना प्रसारित कर रहा है लेकिन उसके पश्चिम में बना मन्दिर पूर्णतया खण्डहर में परिवर्तित हो चुका है। पाल के मध्य मन्दिरों का एक समूह है, जहाँ उदयश्याम भगवान, संकटमोचक हनुमानजी, महादेव एवं अन्य मन्दिर स्थित हैं। पाल के अन्त में उत्तरी किनारे पर एक भव्य शिव मन्दिर का खण्डहर विद्यमान है। पाल के पूर्वी छोर के नीचे, नाले एवं पूर्व महल के पास उदयसागर भेरूनाथ एवं नरसिंह माता का भव्य मन्दिर एवं धर्मशाला बनी हुई है।

पाल पर सभी मन्दिरों का उच्च स्तर का रखरखाव एवं विकास अपनी वैधानिक सीमा (राजस्व लेखों) के अन्दर होना चाहिये। इसके अतिरिक्त वर्तमान में इस पाल पर स्थित जर्जर एवं खस्ताहाल मन्दिरों का जनसहभागिता एवं पुरातत्व विभाग के सहयोग से पुनरुद्धार कर इन्हें दर्शनीय बनाया जाना चाहिये। इससे पाल की सुन्दरता में अभिवृद्धि के साथ पुरातन संरक्षण संभव हो सकेगा एवं पुनः स्थानीय एवं विदेशी पर्यटकों को यह झील अपनी ओर आकर्षित कर सकेगी।

उदयसागर की पाल पर स्थित ऐतिहासिक मन्दिर समूह एवं रखरखाव के अभाव में पाल का विकृत स्वरूप

प्राचीन मन्दिरों को दर्शनीय बनाना–महत्ती आवश्यकता

श्री उदयश्याम भगवान मन्दिर

संकटमोचक हनुमान मन्दिर

महादेव मन्दिर

माँ कालिका मन्दिर

उदयसागर भेरूजाव एवं नरसिंह माता मन्दिर

ऐतिहासिक खण्डहर

ऐतिहासिक खण्डहर

मुख्य पाल पर स्थित मन्दिरों का जीर्णोद्धार आवश्यक

**उदयसागर झील का पूर्व स्वरूप एवं उसकी पुकार** : करीब 450 वर्षों पूर्व बनी उदयसागर झील उदयपुर शहर की प्रथम रक्षा पंक्ति ही नहीं रही, बल्कि इसके आसपास के क्षेत्रों में सिंचाई सुविधा उपलब्ध करवाकर हमें अन्न उत्पादन में आत्मनिर्भर भी बनाया। पूर्व में आयड़ नदी वर्षपर्यन्त बहने के कारण उदयसागर झील का पानी पतली मोरी के माध्यम से बेड़च नदी को भी सदा आबाद रखता था। इस झील के सभी किनारों पर बसे गांवों के कुएँ सदैव पानी से भरे रहते थे। किसान दो से तीन फसलों की खेती कर आर्थिक रूप से सम्पन्न एवं कुशलता का अनुभव करते थे। समय बीता, देश आजाद हुआ। उदयपुर शहर के घरों में पेयजल उपलब्ध होने लगा। नालियों का गन्दा पानी वर्षों बाद सेफ्टी टेंक के सीवरेज के साथ बहने लगा। ऊँचे क्षेत्र की नाली नीचे वाली से जुड़ती गई और यह नाली नाले में परिवर्तित होकर शहर के सबसे निचले क्षेत्र में बहने वाली आयड़ नदी में इसका पानी समाहित होने लगा।

आयड़ नदी का शुद्ध निर्मल जल प्रदूषित होता गया। इसके साथ शहर के दक्षिण–पूर्वी क्षेत्र के औद्योगिकीकरण से उसका अपशिष्ट भी आयड़ नदी के प्रदूषित जल में मिलकर सूखानाका क्षेत्र पर उदयसागर झील में मिलता गया। विरासत में मिली उदयसागर झील धीरे–धीरे प्रदूषित होती गई। हम चिन्तित नहीं हुए क्योंकि इसका जल पेयजल के रूप में शहरवासी उपयोग नहीं कर रहे थे। वर्ष उपरान्त वर्ष इसके जल में पोषक तत्वों, डिटरजेन्ट, वेस्ट प्लास्टिक, पैकिंग मटेरियल आदि का घनत्व बढ़ता गया। काई एवं जलकुंभी का फैलाव होने लगा। पानी का रंग बदलता गया।

विरासत में मिली इस सबसे पुरानी झील को हमने सेवा के बदले में क्या पारितोषिक दिया, उदयसागर झील पुकार रही है कि मुझे प्रदूषण एवं अतिक्रमण से बचा लो। मैं तो उदयपुर शहर के भविष्य के पेयजल का मुख्य स्रोत बनूँगी। मेरा क्या स्वरूप 1916 में था लेकिन आयड़ नदी पर सीवरेज गन्दा पानी शुद्धीकरण यंत्र की स्थापना से वर्ष 2019 से मेरा प्रदूषण कुछ हद तक कम हुआ, काई एवं जलकुम्भी का फैलाव घटा, पानी का रंग भी बदलने लगा। आयड़ नदी को गन्दे पानी एवं सीवरेज से मुक्त कर दो, मैं पुनः अपने वास्तविक स्वरूप में निखर जाऊँगी। मेरी सीमा का अतिक्रमण भी नहीं हो, ऐसी आप सबसे आशा है।

उदयसागर झील : कंटीली झाड़ियाँ, जलकुंभी एवं अन्य खरपतवार से आच्छादित

पाल पर पशुओं का विचरण

प्रदूषित पानी पर जलकुंभी एवं अन्य खरपतवार का वृहद् स्तर पर फैलाव

पाल पर टूटी जालियाँ

उपेक्षित पाल पर जंगली पौधों का फैलाव

मन्दिर से सटी पाल पर जंगली पौधों का फैलाव

झील के प्रदूषित पानी पर जलीय खरपतवार

मुख्य कच्ची पाल पर जंगली पौधे एवं झाड़ियाँ

उदयसागर में आयड़ नदी का प्रवेश स्थल पर फैली जलकुंभी एवं गन्दगी

मोरी में काई का फैलाव

झील के पश्चिमी छोर उदयनिवास के किनारे पर जलकुंभी, काई का विस्तार

**पाल का वर्ष 2016 का परिदृश्य** : वर्ष 2016 में पाल का परिदृश्य अति कुरूप था। पक्की एवं कच्ची पाल का उपयोग एक चारागाह के रूप में हो रहा था। चारों ओर अव्यवस्थित विभिन्न तरह के विशाल जंगली पेड़ों के साथ कंटीली झाड़ियों एवं अन्य खरपतवारों से भरा पड़ा था। कचरा एवं प्लास्टिक अवशेष चारों ओर बिखरे हुए देखें जा सकते थे। गांव के पशु अनवरत रूप से घूमने–चरने के साथ सभी स्थानों पर गन्दगी करते थे। शहरवासियों एवं पर्यटकों के लिए खाद्य पदार्थ, चाय–कॉफी, विश्राम स्थल, सुविधा कक्ष आदि का अभाव था। पाल के मध्य एक प्याऊ बनी हुई थी, जिसमें सादा या शुद्ध जल है, इसका कोई उल्लेख नहीं था। हिन्दुस्तान जिंक एवं जलदाय विभाग के पम्प हाउस का निर्माण एवं रखरखाव उच्च स्तर का नहीं है। जलदाय विभाग ने पाल के मध्य टंकी बना दी। विद्युत खंभे, ट्रांसफॉर्मर, क्रेन बहुत ही अव्यवस्थित रूप से स्थापित किये गये हैं। प्रकाश व्यवस्था भी अपर्याप्त थी। वाहन पार्किंग, सुरक्षा व्यवस्था का अभाच था। विरासत में मिली इस झील एवं इसकी पाल का ऐतिहासिक महत्व है, अतः इसके समुचित रखरखाव के साथ विकास कार्य भी उच्च स्तर के होने चाहिये। इस हेतु पिछले कुछ वर्षों से किये जा रहे कतिपय प्रयास प्रशंसनीय हैं, जो आगे भी व्यवस्थित रूप से गतिमान होंगे, ऐसी अपेक्षा है।

पाल का उपग्रह चित्र (वर्ष 2016)

**पाल पर स्थित पम्प हाउस, विद्युत खंभे एवं ट्रांसफार्मर का अव्यवस्थित स्वरूप** : इस झील के जल का उपयोग सिंचाई, पेयजल एवं हिन्दुस्तान जिंक द्वारा एक शासकीय समझौते के अन्तर्गत किया जा रहा है। हिन्दुस्तान जिंक का पम्प हाउस काफी अव्यवस्थित रूप से बना हुआ है। इसके विपरीत इसी संस्था द्वारा मानसी वाकल पेयजल परियोजना के अन्तर्गत आधुनिक पम्प हाउस बनाया गया है जो कि काफी उन्नत एवं दर्शनीय है। ऐसा ही पम्प हाउस इस झील पर भी बनाया जाना चाहिये था।

साथ ही पम्प हाउस के ऊपर पाल पर विद्युत खंभे, ट्रांसफार्मर, क्रेन आदि भी अव्यवस्थित रूप से स्थापित किये गये हैं। इससे पाल की सुन्दरता एवं झील के प्राकृतिक सौन्दर्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। इनका व्यवस्थित पुनर्निर्माण अति आवश्यक है।

**पाल पर केन्टिन (खाद्य सामग्री) एवं प्याऊ** : उदयसागर पाल पर वर्तमान में भी शहरवासियों एवं पर्यटकों के लिए चाय–कॉफी, खाद्य सामग्री आदि की उपलब्धता हेतु खुली थड़ियाँ ही संचालित हैं जो कि मानवीय स्वास्थ्य के हित में नहीं है। इसके पास ही एक पक्की प्याऊ बनी हुई है जिसमें पेयजल उपलब्ध है।

**कच्ची पाल की पूर्व स्थिति** : पूर्व में कच्ची पाल की सतह का उपयोग एक चारागाह के रूप में हो रहा था। कचरा व प्लास्टिक अवशेष चारों ओर आच्छादित थे। अनेक जंगली पेड़, कंटीली झाड़ियाँ आदि पनप चुकी थी। पशु अनवरत रूप से घूमते देखें जा सकते थे। इस पाल पर पूर्व में एक सुन्दर उद्यान था, रख–रखाव के अभाव में इसकी अत्यन्त दयनीय स्थिति बन चुकी थी।

कच्ची पाल पर कँटिदार झाड़ियां, कचरा, प्लास्टिक अवशेष एवं मुक्त विचरण करते पशु

**पानी की टंकी के स्थान परिवर्तन की आवश्यकता** : उदयसागर झील के पास स्थित गांवों में पेयजल उपलब्ध कराने हेतु झील की पक्की पाल के मध्य जलदाय विभाग की टंकी एवं पाल के पश्चिमी छोर पर पम्प हाउस बना हुआ है। यह दो संरचनाएं इस पाल की विशालता एवं सुन्दरता पर प्रतिकूल प्रभाव ड़ाल रही हैं। पानी की टंकी को पाल के दोनों तरफ स्थित किसी भी पहाड़ी पर बनाया जा सकता था जिससे झील के आसपास स्थित गांवों में पानी की उपलब्धता समुचित दबाव के साथ संभव हो सकती थी। अतः इस झील की सुन्दरता में अभिवृद्धि हेतु उक्त पानी की टंकी एवं पम्प हाउस का अन्यत्र स्थानान्तरण करना अत्यन्त आवश्यक हो गया है।

पाल पर अनियोजित रूप से निर्मित पानी की टंकी – पाल की भव्यता में अवरूद्धता

**पाल पर बने मन्दिरों के जीर्णोद्धार की आवश्यकता** : पाल के मध्य ठाकुर श्री उदयश्याम भगवान, श्री संकटमोचक हनुमान एवं महोदव मन्दिर स्थित हैं, जो कि करीब 450 वर्षों से भी अधिक पुराने हैं। पदस्थ तपस्वी सन्त श्री 1008 श्री महन्त ऊँकारदास जी रवाकी द्वारा श्री विष्णु महायज्ञ का आयोजन दिनांक 24.05.1985 मिति वैशाख शुक्ल 4 सम्वत् 2042 बुधवार से दिनांक 02.05.1985 मिति वैशाख शुक्ल 12 सम्वत् 2042 गुरुवार तक किया गया। इस काल में इन मन्दिरों का जीर्णोद्धार अवश्य हुआ होगा। पुरातत्व महत्व के मन्दिरों एवं परिसर की स्थिति को देखते हुए वर्तमान में इनके समुचित जीर्णोद्धार की महत्ती आवश्यकता है। इससे इन मन्दिरों की भव्यता के साथ पाल की सुन्दरता में भी अभिवृद्धि संभव होगी। मन्दिरों के पूर्वी छोर पर स्थित आश्रम को महन्तजी एवं भक्तगण से विचार–विमर्श कर पाल के नीचे आबादी क्षेत्र में उपयुक्त स्थल पर स्थानान्तरित करने हेतु राज्य सरकार द्वारा आवश्यक भूमि आवंटित करने के साथ आश्रम निर्माण में आर्थिक सहायता भी उपलब्ध करवायी जानी चाहिये। इस आश्रम के स्थानान्तरण से मन्दिर सड़क से दृष्टिगत होने से भक्तगण, शहरवासी, स्थानीय तथा विदेशी पर्यटक मन्दिरों तक सहजता से पहुँच सकेंगे तथा दर्शन लाभ लेने के साथ झील की विशालता एवं भव्यता से परिचित होंगे।

**पाल के ऊपरी छोर का विकास अपेक्षित** : ठाकुर श्री उदयश्याम भगवान मन्दिर समूह एवं उसके परिसर के आगे उत्तरी छोर की शेष पाल का समुचित विकास एवं सौन्दर्यीकरण अपेक्षित है। इसी स्थान पर बाँध कई स्थानों पर खण्डित है, जिसकी सुरक्षा एवं सुन्दरता के लिए उचित मरम्मत की आवश्यकता है। पाल के इस छोर पर स्थित महादेव मन्दिर के खण्डहर का जीर्णोद्धार भी आवश्यक है। इसकी सुरक्षा एवं रखरखाव के लिए इसे इसी पाल क्षेत्र में शामिल करना आवश्यक है।

**पाल, उद्यान एवं नव-निर्माण** : उदयसागर पाल की सतह का उपयोग पूर्व में एक चारागाह के रूप में हो रहा था। कचरा व प्लास्टिक अवशेष चारों ओर अच्छादित होने के साथ पशु मुक्त विचरण करते देखें जा सकते थे। इस पाल पर पूर्व में एक सुन्दर उद्यान था। रखरखाव के अभाव में इसकी अत्यन्त दयनीय स्थिति हो गई एवं यह चारागाह में परिवर्तित हो गया।

वर्ष 2019 में नगर विकास प्रन्यास ने झील की पक्की पाल पर पत्थर जड़ाई के साथ दो आर.सी.सी. के ढ़लमा खंभों पर सुन्दर छतरियां बनाई। बैठने के लिए आरामदायक कुर्सिया भी स्थापित की गई, परन्तु वर्तमान में इनके पर्याप्त रखरखाव की आवश्यकता है। पक्की पाल के साथ कच्ची पाल पर सीढ़ीदार उद्यान बनाया गया। बड़े पेड़ों के साथ गोल व चौकोर थाले बनाये गये। इस उद्यान के डिजाइन पर समुचित ध्यान दिया जाता तो इस पर फव्वारें स्थापित कर इसे और भी आकर्षक बनाया जा सकता था। इसके सुन्दर स्वरूप से स्थानीय एवं विदेशी पर्यटकों के आकर्षण में आशातीत वृद्धि होती।

ये छतरियाँ राजसमन्द पाल पर बनी छतरियों या मण्डप की तर्ज पर संमगमरमर से बनायी जाती तो अधिक टिकाऊ एवं आकर्षक बन सकती थी। पाल पर स्थापित बिजली के खंभे एवं ट्रांसफार्मर आदि व्यवस्थित रूप से अच्छी प्रकाश व्यवस्था के साथ लगाये जा सकते हैं। पाल पर आने वाले स्थानीय नागरिकों एवं पर्यटकों के लिए उच्च स्तरीय केन्टिन, विश्राम स्थल एवं सुविधा कक्ष का निर्माण नगर विकास प्रन्यास द्वारा या पीपीपी मोड़ पर किया जाना चाहिये। पाल के कुछ स्थान पर व्यवस्थित वृक्षारोपण किया गया है जो प्रशंसनीय है। पाल के प्रवेश द्वार पर काऊकेचर लगाने से पशुओं का विचरण भी अवश्य रुकेगा।

पाल का उपग्रह चित्र (वर्ष 2019)

पाल का विकसित स्वरूप

पाल पर नवनिर्मित मण्डप : यह संगमरमर से बनाया जाता तो अधिक उत्तम रहता

**पाल पर वृक्षारोपण** : जलदाय विभाग की पानी की टंकी एवं ठाकुर श्री उदयश्याम भगवान मन्दिर परिसर के मध्य पूर्व अतिक्रमित क्षेत्र पर उच्च स्तर का वृक्षारोपण किया गया है। यहाँ पौधों की बढ़वार एवं सुरक्षा व्यवस्था उत्तम है, जो कि अति प्रशंसनीय है। इस प्रकार का नियंत्रित एवं व्यवस्थित वृक्षारोपण पाल के अन्य स्थानों पर भी किया जाना चाहिये।

**टेरेस गार्डन** : कच्ची पाल पर बना टेरेस गार्डन करीब तीन से अधिक भागों में बंटा हुआ है। प्रत्येक टेरेस को पक्की दीवार से अलग किया है। एक टेरेस से दूसरे तक जाने के लिए सीढ़ियाँ बनाई गई है। प्रत्येक टेरेस को समतल कर उद्यानिकी घास लगाकर किनारों पर क्यारियों का निर्माण कर वार्षिक एवं मौसमी फूल लगाये जाने चाहिये। प्रत्येक टेरेस पर एक सुन्दर फव्वारे के साथ एक संगमरमर की छतरी बनाई जा सकती थी, जिस पर बैठकर पर्यटक प्रकति की सुन्दरता का आनन्द उठाते। कुछ कुर्सियों को उद्यान एवं कुछ को छतरी में लगाई जाती तो अधिक सुविधाजनक रहता।

करीब–करीब प्रत्येक बड़े पेड़ के साथ गोलाई युक्त अथवा चौकोर चबूतरे बनाकर उस पर पत्थर जड़े गये। टेरेस गार्डन में इस प्रकार की संरचनाएं इसकी सुन्दरता में आशातीत वृद्धि नहीं करती तथा पौधों की वृद्धि में भी रुकावटें डालती हैं। कुछ समय के बाद पेड़ों के तनों की वृद्धि एवं उनकी जड़ों के फैलाव के साथ इन चबूतरों के फटने की पूर्ण संभावना रहती है।

इस उद्यान का नियोजन किसी उद्यान विशेषज्ञ से कराया जाता तो अधिक उत्तम रहता। पुराने पेड़ों को बिना काटे उद्यान के अनुकूल फूल व छायादार पेड़ किसी विशेष बनावट से लगाये जाते तो समय के साथ उद्यान की सुन्दरता में अभिवृद्धि होती।

मुख्य पाल पर किसी प्रकार का दो या चार पहिया वाहन आने की स्वीकृति नहीं होनी चाहिये। यहाँ पर फतहसागर पाल की तर्ज पर लोहे के गेट के साथ विकिट गेट भी लगाये जाने चाहिये।

मुख्य उद्यान के बाहर उपलब्ध स्थान पर वाहनों की व्यवस्थित पार्किंग, कैन्टिन, विश्राम स्थल एवं सुविधा कक्ष का निर्माण कराया जाना चाहिये। इसे पीपीपी मोड़ पर भी किया जा सकता है। प्रत्येक चारपहिया वाहन पार्किंग स्थल के साथ एक सुन्दर पेड़ लगाया जाना चाहिये। पाल एवं उद्यान सुरक्षा हेतु 24×7 घंटे सुरक्षाकर्मियों की व्यवस्था की जानी चाहिये।

कच्ची पाल पर नव निर्मित उभरते हुए उद्यान का स्वरूप

पाल पर व्यवस्थित वृक्षारोपण

कच्ची पाल पर नव निर्मित उद्यान का विस्तृत स्वरूप – नियमित रखरखाव, म्यूजिकल फव्वारें, संगमरमर के मण्डप आदि की सुनियोजित स्थापना से पर्यटक एवं शहरवासियों के लिए यह एक नये आकर्षण का केन्द्र बन सकेगा।

## उदयसागर झील पूर्ण जलाशय स्तर : बाँध के उत्तरी छोर पर स्थित रिंग रोड को फतहसागर की तर्ज पर विकसित किया जाना चाहिये।



### समीक्षा एवं अनुशंसाएँ

**जल भंडारण क्षमता में वृद्धि संभव** : वर्तमान में उदयसागर झील का पूर्ण जलाशय स्तर 24 फीट है जो कई वर्षों में कभी–कभार पहुँचता है। वर्ष 1932 में अतिवृष्टि के समय बाँध के ऊपर से पानी छलका एवं वर्ष 1973 में यह स्तर 36 फीट तक पहुँचा था, परन्तु इस बाँध को कुछ नुकसान नहीं पहुँचा। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि इस बाँध की सुदृढ़ता 36 फीट तक जल स्तर सहन करने में सक्षम है। कुछ जल विशेषज्ञों एवं अभियंताओं का मानना है कि इस बाँध की अधिकतम् जल भराव क्षमता को 32 फीट तक बढ़ाया जा सकता है, जिससे उदयपुर शहर की वर्तमान एवं भावी पेयजल व औद्योगिक जल आवश्यकता की पूर्ति सहज ही संभव हो सकेगी। साथ ही पिछोला एवं फतहसागर झील तंत्र, देवास–प्रथम व द्वितीय तथा भावी परियोजना देवास–तृतीय एवं चतुर्थ में संचित होने वाले जल से इन्हें वर्षभर भरा रखा जा सकेगा एवं उदयपुर शहर को दुनिया के श्रेष्ठतम् एवं लोकप्रिय पर्यटक स्थल के रूप में परिवर्तित होने से कोई नहीं रोक सकेगा। उदयसागर झील को अधिकतम् 32 फीट तक भरने से उदयपुर शहर को पेयजल के लिए पिछोला एवं फतहसागर झील तंत्र से कम पानी उठाना होगा। इसके अतिरिक्त देवास योजनाओं से प्राप्त अधिशेष जल को भी उदयसागर झील में समय–समय पर समाहित किया जा सकेगा।

पाल के नियमित रखरखाव एवं खरपतवार मुक्त रखने की आवश्यकता

**झील की गहराई में वृद्धि** : करीब 450 वर्ष पुरानी झील में बरसाती पानी के साथ बहकर आई मिट्टी पैंदे पर नियमित रूप से जमा होने के कारण इसकी गहराई की कमी आने से इसकी भराव क्षमता कम होती चली गई। वर्तमान में इसकी गहराई औसत 5.40 मीटर एवं अधिकतम् मात्र 9.0 मीटर ही है। अतः इस झील की मिट्टी निकालकर झील की गहराई एवं भराव क्षमता में समुचित वृद्धि की जानी चाहिये। गहराई में वृद्धि हेतु झील की अधिकतम् जल स्तर रेखा के साथ लगे क्षेत्र को पक्षियों के अनुकूल रखते हुए गहरे क्षेत्र को चिह्नित कर एक से दो मीटर गहराई तक की मिट्टी को तकनीकी एवं भूगर्भ जल विशेषज्ञों के परामर्श एवं निगरानी में किसानों, ईंट भट्टों के मालिकों, नर्सरी उद्यमियों आदि को निकालने की अनुमति दी जानी चाहिये। इससे झील की निःशुल्क गहराई होने के साथ सम्बन्धित विभाग को रॉयल्टी भी मिलेगी।

मिट्टी कारोबारियों को झील के रूण क्षेत्र में जगह–जगह मनमर्जी से भारी मशीनों से छलनी करने की छूट नहीं होनी चाहिये। झील किनारे के छिछले क्षेत्र के समीप छोटे–छोटे मिट्टी के टापू बना दिये जाये तो झील की भराव क्षमता वृद्धि के साथ इस नम भूमि में स्थानीय एवं प्रवासी पक्षी बड़ी संख्या में अपना आवास बनायेंगे। इन पर जलीय जीव भी विश्राम कर सकेंगे एवं मछलियों को अण्डे देने के लिए भी इन टापुओं के किनारे उपयोगी साबित होंगे। टापू यथासंभव चारों ओर से पानी से घिरे हुए होने चाहिये।

उदयसागर – रिक्त अवस्था में

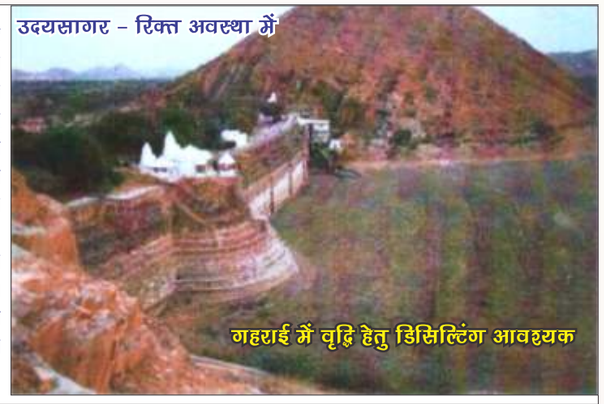

गहराई में वृद्धि हेतु डिसिल्टिंग आवश्यक

**मत्स्य पालन एवं जैव विविधता संरक्षण** : इस हेतु भी इस झील की महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है लेकिन वर्तमान में मादड़ी औद्योगिक क्षेत्र में स्थित फैक्ट्रियों का औद्योगिक अपशिष्ट एवं आयड़ नदी के जरिये शहर का सारा सीवरेज इस झील में समाहित होने के कारण वर्ष में कई बार पानी की सतह पर मृत मछलियाँ एवं अन्य जलीय जीव तैरते हुए देखे जा सकते हैं। इससे आसपास के गांवों में भी कई तरह की बीमारियों के फैलने की आशंका बनी रहती हैं। पानी में ऑक्सीजन की कमी होने से ही ये जीव मरते हैं। पानी में उपस्थित ऑक्सीजन कार्बनिक अपशिष्ट को प्राकृतिक रूप से निस्तारित करने का भी काम करती है। यदि अपशिष्ट ज्यादा है तो मछलियों के हिस्से की ऑक्सीजन भी उसमें खर्च हो जाती है। यदि आयड़ नदी में अपशिष्ट गिरना बन्द हो जाये या उसे शुद्धता उपरान्त ही छोड़ा जाये तभी उदयसागर का पानी स्वच्छ हो सकेगा।

उदयसागर पाल के पश्चिमी छोर को गहरा करने के साथ छोटे-छोटे मिट्टी के टापू स्थानीय एवं प्रवासी पक्षियों के आवास स्थल के रूप में निर्मित किये जाने चाहिये।

औद्योगिक अपशिष्ट – सीवरेजयुक्त पानी से मत्स्य व जलीय जीवों पर प्रतिकूल प्रभाव

**जल क्रीड़ा, नौकायन एवं तैराकी प्रशिक्षण हेतु संभावित स्थल** : उदयसागर झील की विशालता का उपयोग पर्यटन विकास के साथ ही जल क्रीड़ा, नौकायन एवं तैराकी प्रशिक्षण में भी किया जाना चाहिये। इस झील में लम्बी दूरी नाव दौड़, पेराशूट राईडिंग, हाई स्पीड एण्ड पेडल राईडिंग आदि की प्रबल संभावनाएँ हैं। इसके अतिरिक्त झील के पश्चिमी छोर पर स्थित उदयनिवास जो भारत स्काउट एवं गाइड, उदयपुर शाखा को आवंटित है, के विशाल परिसर में एन.सी.सी. नेवल यूनिट का उच्च स्तर का प्रशिक्षण स्थल भी बनाया जा सकता है।

उदयसागर की विशालता : जल क्रीड़ा एवं नौकायन के लिए सर्वोत्तम स्थल

संभावित जल क्रीड़ा एवं नौकायन के विविध स्वरूप

**आयड नदी – उदयसागर जल उपचार व सुधार परियोजना – ग्रीन ब्रिज टेक्नोलॉजी** : आयड़ नदी उदयपुर शहर के मध्य बहती हुई उदयसागर झील में सूखानाका क्षेत्र में मिलती है। इस नदी के जरिये शहर का सारा सीवरेज एवं फैक्ट्रियों का अपशिष्ट उदयसागर झील में समाहित हो रहा है। वर्तमान में इस झील के पानी का उपयोग पेयजल के रूप में नही किया जा सकता है। जल के पूर्णतया प्रदूषित होने के कारण इसका काफी क्षेत्र जलकुंभी, काई आदि से प्लावित है। झील एवं आयड़ नदी का संगम स्थल वेस्ट प्लास्टिक, पैकिंग मटेरियल व जलकुंभी से पूर्णतया ढका हुआ है। यह झील भी चारों ओर से अतिक्रमण की चपेट में है।

आयड़ नदी एवं उदयसागर के संगम स्थल के विभिन्न प्रदूषित स्वरूप

आयड़ नदी के पर्यावरणीय स्वरूप का जीर्णोद्धार करने हेतु सृष्टि इको रिचर्स इन्स्टीट्यूट (SERI), पुणे द्वारा विकसित ''पर्यावरण तकनीक – ग्रीन ब्रिज टेक्नोलॉजी'' से आयड़ नदी सुधार परियोजना का कार्य उदयपुर चेम्बर ऑफ कॉमर्स एण्ड इण्डस्ट्रीज, झील संरक्षण समिति, नगर विकास प्रन्यास, जिला परिषद्, स्थानीय पंचायत एवं संभागीय आयुक्त के सहयोग से पूर्ण किया गया।

The technology is known as “Green Bridges with shoreline and stream ecosystemtreatment with a combination of plant and bacterial eco-remediation”. The process does not require any electricity /machinery/skilled labour and is entirely dependent on bio-degradation and bio-absorption processes. The only energy source is the Sun and the Air and the river is made to synthesize its own chemicals and use them for eco-remediation. More than 100 MLD of domestic and industrial waste water is being treated. The project construction started in Dec. 2009 and was completed in March, 2010. and the components are ‘Ecofert’, Culture, Biomats, Stone, Gravel, sand, Shrubs/Grasses/Plants, Removal of Water Hyacinth, Installation of green Bridges and Metal Screens. Operational (recurring) cost is indicated as Rs. 5 lakh/annum for removal of garbage from screens and its disposal, plant cutting, maintenance of structures, charges for testing of water and supervision charges.

ग्रीन ब्रिज टेक्नोलॉजी : स्थापना के सक्रिय सहयोगी

6 Green Bridges have been constructed (2 near Bhoionki Pancholi Village and 4 near Sukha Naka Bridge) of length ranging between 12-14 metres depending on width of the river. 2 Mild Steel Screens with anticorrosive painting are installed to stop grit and other ‘flotsam and

## उदयसागर जल उपचार एवं सुधार परियोजना – ग्रीन ब्रिज टेक्नोलोजी के महत्वपूर्ण स्वरूप

jetsam' flowing with the sewage. Trees and shrubs have been planted to strengthen the river banks. The media consists of some natural bacteria, water purifying shrubs, plants, stones and sand, coconut fibre aided by sunlight.

The first phase of the project that started in December 2009 included the planting of trees, shrubs, grasses and water plants. This was completed on the 16th March 2010.The capital cost of the project of 33 Lakhs includes component Ecofert, Culture, Biomats; Stone, Gravel, Sand & Shrubs/ Grasses/ Plants; Water Hyacinth Removal and other cleaning processes; the Installation of green bridges and Metal Screens for polythene control. The yearly operational cost will be 5 lakhs to remove garbage from screens with safe disposal; the removal of the water hyacinth.

**Results of the Project** : These have already had a strong impact on revival of the Ahar River. These are illustrated below :-

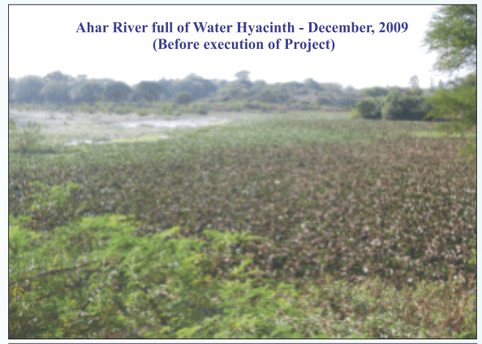


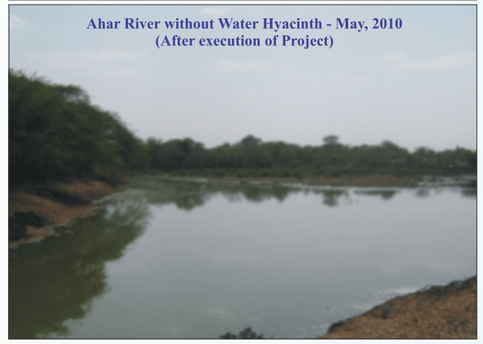


- After 6 Green Bridges were commissioned the foul smell at the site has completely disappeared.
- The BOD and COD, which are critical indicators, have gone down by more than 70% in just one month.
- The formation of foam, which used to collect at Sukha Naka Bridge (after the 6 Bridges) in huge quantities has virtually vanished.
- The water colour is gradually changing from Black to Green to brown.
- The small roadside tea shop has been converted into the now busy "Green Bridge Restaurant" popular with local residents.
- The quality of the ground water has improved phenomenally making it possible for villagers and animals to use the water from nearby wells and tube wells for both drinking and bathing.
- Oxygen content of the water has increased many folds.
- After algae developed, Phytoplankton (microscopic plants) appeared and now Zooplanktons have emerged in profusion
- Hardy fish such as 'Sanwal' 'Bam' and 'Chandi Chal' can now be seen living on algae & zooplanktons. Villagers are regularly fishing at the project site.
- Fish and tortoise can also be seen now in the river.
- As fish stocks have increased, water snakes have reached the treated water, feeding on the fish.
- The river water is now full of water insects, worms and fish attracting predatory birds. These can be seen feeding on fish, worms and insects on the water front. Even the supreme predator ' The human' (top of the food chain pyramid) are fishing in the area.
- The good bacteria introduced into the green bridges are active downstream as well as 300 metres upstream
- Plants now established as part of the project are flourishing.

The process of rejuvenating this Dead River has shown how a public and private partnership can be successful and has inspired other projects.

**उदयसागर एवं सिंचाई क्षेत्र** : उदयसागर झील से अनेक पंचायतों के कई छोटे–बड़े गांव जिनमें बिछड़ी, चंगेड़ी, देबारी, गोवला, करगेट, सिंहाड़ा, मालों का गुड़ा, मेड़ता, खेमली, महाराज की खेड़ी, नान्दवेल, भदेसर, राजपुरा, गोवड़ा, कट का कुआं आदि के 6.5 हजार हेक्टयर क्षेत्र में सिंचाई सुलभ होती है।

उदयसागर के गेट से निकलने वाली दायीं व बायीं मुख्य नहर तथा इन नहरों से जुड़ी नहरें एवं वितरिकाओं को समुचित रखरखाव के साथ पक्का करना अत्यन्त आवश्यक है। ये नहरें क्षतिग्रस्त होने के साथ ही जंगली झाड़ियां, कूड़ा–करकट एवं मिट्टी–पत्थरों से अटी पड़ी हैं। कच्ची नहरों के फलस्वरूप पानी खेतों तक पहुंचने से पूर्व ही करीब 40 प्रतिशत सीपेज में चला जाता है। सिंचाई के लिए पानी खुली नहरों के स्थान पर पाइप लाइन के माध्यम से ले जाने पर विचार किया जाना चाहिये। इससे पानी की बचत होगी तथा सिंचाई क्षेत्र में आशातीत वृद्धि भी होगी। किसानों को सिंचाई की आधुनिक ड्रीप, फव्वारा पद्धति एवं टांके का उपयोग करना चाहिये।

**उदयसागर में टापू** : शहर की सबसे बड़ी झील उदयसागर के नैसर्गिक सौन्दर्य बनाये रखने हेतु एवं वेटलेण्ड अधिनियम के तहत झील के अन्दर किसी टापू एवं अधिकतम् जल स्तर के आसपास के क्षेत्रों पर व्यावसायिक गतिविधियों, होटल आदि के निर्माण की राज्य सरकार या जल संसाधन विकास विभाग द्वारा स्वीकृति नहीं दी जानी चाहिये। झील के अधिकतम् एवं पूर्ण जल भराव क्षमता के अन्दर किसी भी प्रकार की कच्ची या पक्की सड़क का निर्माण भी नहीं किया जाना चाहिये। राज्य सरकार द्वारा जल संसाधन विभाग के किसी विशेष पदेन अधिकारी को स्थायी रूप से यह जिम्मेदारी दी जानी चाहिये कि वर्ष में कम से कम एक बार यह प्रमाणित करें कि इस संरक्षित क्षेत्र के अन्दर या अधिकतम् भराव क्षेत्र पर कोई निर्माण कार्य नहीं हो रहा है। वर्तमान में उदयसागर झील के मध्य स्थित एक मात्र बड़े टापू पर एक भव्य होटल का निर्माण हो चुका है।

उदयसागर के एकमात्र टापू का उपग्रह चित्र

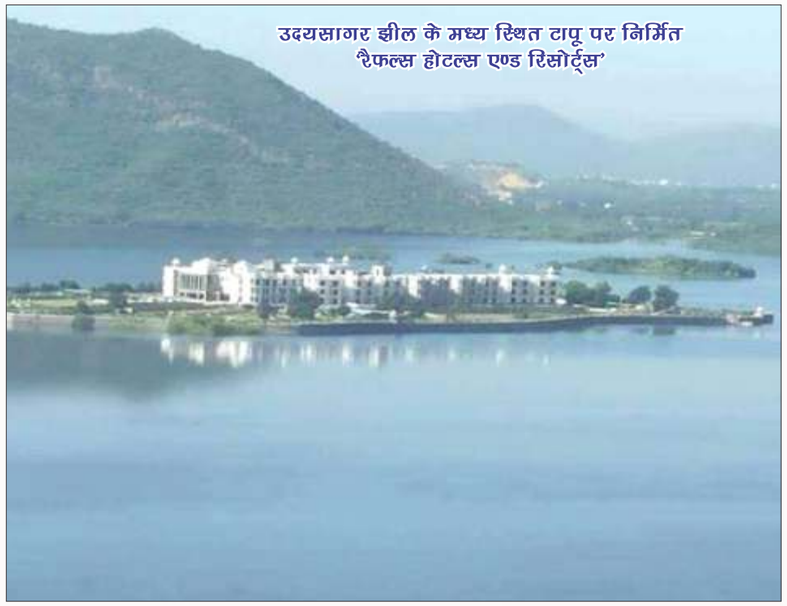
उदयसागर झील के मध्य स्थित टापू पर निर्मित रैफल्स होटल्स एण्ड रिसोर्ट्स'

**रैफल्स होटल्स एण्ड रिसोर्ट्स** : उदयसागर झील शहर की सबसे प्रसिद्ध झीलों में से एक है, जो अरावली की पहाड़ियों से घिरी हुई है। रैफल्स रिसोर्ट उदयपुर की उदयसागर झील के उत्तर–पश्चिमी किनारे के पास स्थित एक द्वीप पर पांच सितारा होटल एण्ड रिसोर्ट्स के रूप में स्थित है। ऊँचे ताँबे के गुम्बदों एवं अत्यन्त सुन्दर, आकर्षक पल्लाडियन खिड़कियों से सुसज्जित इसकी इंडो सारसेनिक वास्तुकला के साथ इसे एक समकालीन एवं आलीशान रूप दिया गया है। उदयपुर से 13 कि.मी. की दूरी पर स्थित इस होटल में सड़क मार्ग से झील के किनारे स्थित वेलकम लाउंज तक आसानी से पहुँचा जा सकता है। यहाँ से होटल द्वारा संचालित नावों के माध्यम से द्वीप तक पहुँचा जा सकता है। इस दौरान उदयसागर झील के सुरम्य, शांत और निर्मल जल के अवलोकन का आनन्द ले सकते है। हरी–भरी वनस्पतियों और हरियाली से आच्छादित यह द्वीप शहर के बाकी हिस्सों की तुलना में अधिक प्रामाणिक और शांत है। द्वीप पर किये गये सभी निर्माण यूरोपीय और स्थानीय स्थापत्य शैली का एक शानदार मिश्रण है। कोंर्ड नास्ट ट्रेवलर के अनुसार वर्ष 2022 में यह दुनिया का तीसरा सबसे अच्छा होटल है।

रैफल्स होटल्स एण्ड रिसोर्ट्स विशाल सुन्दर परिसर

उदयसागर के बैकवाटर क्षेत्र में अनेक गाँव टापु जैसे बन गये

राज्य सरकार ने उदयसागर झील को संरक्षित क्षेत्र घोषित कर दिया है। साथ ही संरक्षित क्षेत्र की सीमा भी तय कर दी। स्वायत्त शासन विभाग द्वारा 16.04.2017 को दो अधिसूचनाऐं जारी की गई। पहली में इस झील का सीमांकन किया गया है जबकि दूसरी में इसे संरक्षित घोषित किया गया है। जिला स्तरीय झील संरक्षण एवं विकास समिति, उदयपुर की ओर से इसका प्रस्ताव भेजा गया। उदयसागर को संरक्षित घोषित करने के बाद अब वेटलैंड घोषित करने की प्रक्रिया भी पूरी होगी। उदयपुर जिले की उदयसागर झील को पहली वेटलैंड संपत्ति घोषित होने का गौरव मिलेगा। उदयसागर शहर की सबसे बड़ी झील हैं तथा वेटलैंड बनाने के लिए अनेक गाँवों की जमीन को इसमें समाहित किया जायेगा। वेटलैंड घोषित होते ही झील का संपूर्ण परिक्षेत्र प्रकृति संरक्षण के लिहाज से कानूनी रूप से सुरक्षित हो जायेगा। उदयसागर को वेटलैंड के रूप में अधिसूचित करने के लिए राजस्व, जल संसाधन एवं वन विभाग को सक्रियता से जुटना चाहिये। उदयसागर प्रदेश का तीसरा वेटलैंड हो, यह हमारा उद्देश्य होना चाहिये।

**उदयसागर झील रामसर वेटलैंड के लिए सर्वोत्तम** : राजस्थान में मात्र सांभर झील व भरतपुर में केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान रामसर वेटलैंड घोषित है। जिन वेटलैंड पर लगभग 20 हजार पक्षियों का आना–जाना होता हैं, उन्हें रामसर वेटलैंड स्थल घोषित किया जा सकता है। उदयपुर जिले में ऐसे अनेक जलाशय हैं, जिन्हें रामसर वेटलैंड का दर्जा दिलाने से उनको संरक्षित व सुरक्षित रखने के साथ उनका महत्त्व कई गुना बढ़ जायेगा। उदयपुर जिला प्रशासन ने सक्रिय रहते हुए निम्न बड़े जलाशयों को वेटलैंड घोषित कराने हेतु अनुशंसा प्रेषित की।

(1) कोटड़ा तहसील का सेई डेम, (2) वल्लभनगर तहसील का मेनार का भरमेला तालाब (3) मेनार का ढ़ण्ढ तालाब, (4) मावली तहसील का बागोलिया तालाब, (5) गिर्वा तहसील की उदयसागर झील, (6) सराड़ा तहसील की जयसमन्द झील, (7) वल्लभनगर तहसील का वल्लभनगर बाँध, (8) मावली तहसील का बड़गाँव बाँध एवं (9) वल्लभनगर तहसील का भटेवर तालाब।

वेटलैंड नियम, 2010 के नियम 3 के अनुसार आर्द्र भूमियाँ जो पारिस्थितिकी दृष्टि से संवेदनशील और महत्त्वपूर्ण हैं, जैसे– राष्ट्रीय उद्यान, समुद्री पार्क, अभयारण्य, संरक्षित वन क्षेत्र, वन्यजीव निवासी, गरान, प्रवाल, प्रवालभित्ति, प्राकृतिक सौन्दर्य के विशिष्ट क्षेत्रों या ऐतिहासिक या विरासत वाले क्षेत्रों और आनुवंशिक विविधता क्षेत्र आदि वेटलैंड मान्य किये गये। 2500 मीटर ऊँचाई से नीचे की आर्द्रभूमियाँ या आद्रभूमि समूहों जिनका क्षेत्र 500 हेक्टयर के समतुल्य या अधिक हैं, के तहत भी संपत्तियाँ मान्य की गई थी। पर्यावरण विभाग के दिशा निर्देशों में संबंधित विभागों ने वेटलैंड मैनेजमेन्ट एण्ड कंजर्वेशन रूल्स, 2010 के नियम 3 के तहत 9 जलाशयों को वेटलैंड संपत्तियों में शामिल करने के लिए सरकार ने तथ्यात्मक रिपोर्ट भेजी थी। सरकार के पास ये फाइलें पहुंचने के बाद वेटलैंड अधिनियम, 2016 के रूप में संशोधन हो गया जिससे मामला वहीं अटक गया। उपरोक्त दृष्टि से उदयसागर झील की अनेक विशेषताएँ हैं, जिनमें छिछला पानी, जलीय पक्षियों एवं चमगादड़ के लिए उपयुक्त स्थल, सर्दियों में प्रवासी पक्षी का डेरा रहना, वन्य जीवों को प्यास बुझाने के लिए सुलभ, मछलियाँ, मगरमच्छ, कछुए आदि का पाया जाना, धूप सेकने और अण्डे देने के लिए सुरक्षित रहना आदि।

उदयसागर झील वेटलैंड घोषित होने पर जलीय पक्षी, पेड़–पौधों की वृद्धि, जमीन में अधिक पानी का रिचार्ज होने के साथ कृषि व जलवायु तंत्र भी ठीक रहेगा। पर्यटन, मछली पालन, सिंचाई इत्यादि से मिलने वाली आजीविका बढ़ेगी। वेटलैंड बाढ़ रोकने एवं कृषि तक पानी पहुंचाने में भी उपयोगी होने के साथ पर्यटन का ग्राफ बढ़ाने में भी इसका बड़ा योगदान रहता है।

उपरोक्त फायदों के साथ झील के पूर्ण जलाशय भराव स्तर और अधिकतम् जल स्तर क्षेत्र में मानवीय गतिविधियाँ पूर्ण प्रतिबंधित रहेगी। जलाशय के पर्यावरणीय हित में कई प्रावधान अस्तित्व में आ जाते हैं। यह बहुतों को अनुकूल नहीं होता है, वहीं प्रशासन पर भी यह जिम्मेदारी आ जाती है कि वह इसके प्रदूषण व अतिक्रमण पर पूर्ण नियंत्रण करें। यहीं कारण है कि राज्य सरकार वेटलैंड निर्धारण तथा उसके दिशा–निर्देश में जान–बूझकर देरी करती आ रही है।

**उदयसागर वेटलैंड घोषित होने पर इन पर रहेगी रोक** :–

- प्रतिबंधित क्षेत्र में मिट्टी, पत्थर या अन्य खनिज नहीं निकाला जा सकेगा।
- जल क्षेत्र को प्रभावित करने वाली गतिविधियाँ नहीं होगी।
- झील में न तो गन्दा पानी छोड़ा जा सकेगा और न ही झील के पानी की निकासी हो सकेगी।
- ऐसी गतिविधियाँ नहीं होगी जिनसे झील के पानी के तापमान में अन्तर आता हो या प्रदूषित होता हो।
- संरक्षित झील के भौगोलिक दायरे में किसी भी तरह की वनस्पति को नष्ट करने, जलाने की गतिविधियाँ नहीं होगी बल्कि इसे संरक्षित किया जायेगा।
- किसी भी तरह के निर्माण कार्य पर पाबन्दी होगी।

**वेटलैंड घोषित होने पर ये काम हो सकेंगे – अनुमति के साथ** :

- बोटिंग, वाटर स्पोर्ट्स, फिशिंग
- स्वीकृति से मिट्टी निकालना
- पानी, वनस्पति, जीव–जन्तुओं को प्रभावित किये बिना होने वाली गतिविधियाँ
- बर्ड वॉचिंग, पदमार्ग, साइक्लिंग
- पेयजल, सिंचाई व अन्य उपयोग के लिए प्लान बनाना होगा।

उदयसागर को वेटलैंड के रूप में संरक्षित करने हेतु झील के पूर्ण भराव स्तर (एफटीएल) और अधिकतम् जल स्तर (एमडब्ल्यूएल) के मध्य इस क्षेत्र के 11 गाँवों (पनवाड़ी, देबारी, टीलाखेड़ा, कमलोद डूंगर, कमलोद, भोईयों की पचोली, कानपुर, खेड़ा कानपुर, लकड़वास, मटून, खरबड़िया, मोटा देवरा) तथा खसरावार 820.4336 हेक्टयर भूमि समाहित होती है। उदयसागर को वेटलैंड (आर्द्र भूमि) घोषित करने के लिए यह प्रथम आवश्यकता है। गाँव वालों को इस भूमि को सहर्ष इस वेटलैंड में समाहित करने के लिए सहमति प्रदान करनी चाहिये। इस क्षेत्र में एक आधुनिक, सर्वसुविधायुक्त एवं पर्यटकों के मध्य लोकप्रिय नये उदयपुर शहर को बसाने हेतु चिन्तन एवं मनन होना चाहिये। किसानों को उनकी जमीन के एवज में बाजार दर से भी अधिक मुआवजा मिलना चाहिये। साथ ही किसानों की शेष भूमि पर नया उदयपुर शहर बसने से उनकी जमीन की कीमत कई गुणा बढ़ जायेगी। वेटलैंड घोषित होने पर भी सिंचाई के पानी के उपयोग में कोई परिवर्तन नहीं होगा।

**उदयसागर झील पेयजल का नया स्रोत** : उदयसागर झील संरक्षित क्षेत्र घोषित होने एवं हिन्दुस्तान जिंक के द्वारा उठाये जा रहे पानी की मियाद दिसम्बर, 2020 में समाप्त होने के साथ उदयपुर शहर के सीवरेज को आयड़ नदी से अलग निकालने एवं जल शुद्धीकरण यंत्र भी स्थापित किये जाने से आयड़ नदी सीवरेज मुक्त हो जायेगी तो स्वतः ही उदयसागर झील का पानी भी शुद्ध हो जायेगा तथा उसका उपयोग पेयजल के रूप में किया जा सकेगा। शहर को वर्तमान में प्रतिदिन 135–140 एमएलडी पानी की आवश्यकता है। सभी झीलें भरी होने की स्थिति में करीब 115 एलएमडी पानी ही झीलों से उठाया जा सकता है।

शहर का विस्तार तीव्र गति से हो रहा है। ऐसे में मौजूदा झीलें पेयजल उपलब्ध करवाने में असमर्थ होती जा रही हैं। अच्छे मानसून और अधिकांश जलाशयों में पर्याप्त पानी होने के बावजूद 20–25 एमएलडी पानी की और आवश्यकता रहती है। साथ ही इससे सभी क्षेत्रों में 48 घंटों में पानी की सप्लाई की जा सकेगी। उदयसागर झील से हिन्दुस्तान जिंक के द्वारा उठाये जा रहे पानी की मियाद दिसम्बर, 2020 में समाप्त हो चुकी है। ऐसे में हिन्दुस्तान जिंक एवं जल संसाधन विभाग के मध्य हुए अनुबन्ध समाप्त होने से 180 एमसीएफटी पानी जलदाय विभाग, जल संसाधन विभाग से प्राप्त कर शहर की बढ़ती हुई जनसंख्या की मांग पूर्ण करने के साथ संपूर्ण शहर में पूर्ण दबाव से जलापूर्ति संभव हो जायेगी।

जलदाय विभाग द्वारा जल संसाधन विभाग से उदयपुर शहर की पेयजल की वर्तमान आवश्यकता के अनुसार उदयसागर से 250 एमसीएफटी पानी उपलब्ध कराने की मांग की है। साथ ही वर्ष 2031 में 186 एमएलडी उपलब्ध कराने हेतु 650 एमसीएफटी पेयजल आरक्षित करने का भी प्रस्ताव दिया है। उदयसागर उदयपुर शहर के पिछोला, फतहसागर व जयसमन्द के बाद मुख्य पेयजल स्रोत होगा, यदि वर्तमान पूर्ण भराव स्तर को यथास्थिति में रखते हुए अधिकतम् जल स्तर को चिह्नित कर इस क्षेत्र को अतिक्रमण मुक्त रखा जाये। साथ ही उदयसागर बाँध की पाल बहुत मजबूत नींव पर टिकी है। यह नींव 42.56 मीटर पानी के भीतर है। अतः झील की भराव क्षमता में वृद्धि की जा सकती है। इसके लिए पूर्ण भराव क्षमता को ऊपर उठाने के स्थान पर अधिकतम् जल स्तर रेखा पर मजबूत रिटेनिंग वॉल बनाकर झील की भराव क्षमता में वृद्धि की जा सकती है एवं वर्ष 2031 तक आवश्यक 650 एमसीएफटी पानी पेयजल के लिए शहर को उपलब्ध हो सकेगा। साथ ही हमारी मुख्य झीलों पिछोला एवं फतहसागर को वर्षभर भरा हुआ रखते हुए पर्यटकों की संख्या में भी आशातीत वृद्धि संभव हो सकेगी।

**नये उदयपुर की स्थापना** : उदयसागर झील के उत्तर, पूर्व व दक्षिण क्षेत्र में नया उदयपुर शहर पर्यटकों के अनुकूल बनाया जावे जिसमें उच्च स्तर के होटल, आवास, केफेटेरिया, खाद्य पदार्थ उपलब्धता स्थल, उद्यान, बाजार, मनोरंजन केन्द्र आदि विकसित किये जावे। इससे इस क्षेत्र के किसानों को अपनी जमीन का अधिकतम् मूल्य प्राप्त हो सकेगा एवं उदयपुर दुनिया के पर्यटकीय स्थलों के मध्य सबसे लोकप्रिय स्थल के रूप में उभरेगा। उदयसागर झील को भरने वाली आयड़ नदी के मुहाने पर अन्दर की तरफ कुछ दूरी तक समुचित गहराई कर उसी लम्बाई तक एक कृत्रिम नदी का निर्माण कर उसे पुनः उदयसागर झील तक जोड़ा जावे। इससे उदयसागर झील से नावें, छोटे क्रूज आदि संचालित होकर मुख्य आयड़ नदी से होते हुए कृत्रिम नदी के माध्यम से पुनः उदयसागर झील में प्रवेश करें, जैसा कि दुनिया के उन्नत पर्यटक स्थल सिंगापुर आदि में संचालित होते हैं। इसी प्रकार मुख्य एवं कृत्रिम आयड़ नदी के दोनों तटों पर पर्याप्त चौड़ी सड़क निर्माण करने के साथ रेस्टोरेन्ट, आवासीय एवं व्यावसायिक भवन के निर्माण किये जाने चाहिये। इस कार्य से उदयसागर के पर्यटकीय महत्त्व में आशातीत वृद्धि संभव हो सकेगी।

अधिकतम् झील स्तर रेखा पर प्रस्तावित रिटेनिंग वॉल के साथ सभी मौसम के अनुकूल ऊँची एवं चौड़ी सड़क बनाई जाये जिससे पर्यटक बिना शोर–शराबे के इस सड़क पर झील के तीनों तरफ भ्रमण कर सके। पूर्ण जलाशय स्तर एवं अधिकतम् जल स्तर रेखा के मध्य क्षेत्र को पूर्ण जलाशय स्तर के साथ पक्षियों के लिए आरक्षित रखते हुए उनके अनुकूल विकसित किया जावे। झील किनारे एवं छिछले क्षेत्र से मिट्टी निकालने की अनुमति नहीं दी जावे। यह क्षेत्र स्थानीय एवं प्रवासी पक्षियों के लिए आरक्षित रखा जाये। इस क्षेत्र को छिछला रखते हुए यहां पर मिट्टी के छोटे टापू बनाकर पक्षियों के पसंदीदा पेड़ लगाये जावे। चूंकि उदयसागर झील अभी तक पर्यटकीय दृष्टि से लोकप्रिय नहीं हो पायी है, अतः स्थानीय एवं प्रवासी पर्यटकों को इस ओर आकर्षित करने के उद्देश्य से झील के गहरे क्षेत्र में अनेक प्रकार की जल क्रीड़ा गतिविधियाँ पीपीपी मोड़ पर संचालित की जानी चाहिये। झील के किनारों पर उच्च स्तरीय विशाल उद्यान विकसित किये जाने चाहिये।

**Highest Gauge Achieved in Udai Sagar**

| Year | Achieved Gauge (in Feet) | Date | Live Capacity | Gross Capacity |
|---|---|---|---|---|
| 1997 | 06'06" | 18.10.1997 | 95.0 | 220.0 |
| 1998 | 03'09" | 28.10.1998 | 47.5 | 172.5 |
| 1999 | B.S. | - | - | 96.5 |
| 2000 | B.S. | - | - | 60.8 |
| 2001 | B.S. | - | - | 60.8 |
| 2002 | B.S. | - | - | 61.2 |
| 2003 | B.S. | - | - | 50.0 |
| 2004 | B.S. | - | - | 54.0 |
| 2005 | 18'01" | 27.09.2005 | 531.5 | 656.5 |
| 2006 | 24'00" | 05.09.2006 | 975.0 | 1100.0 |
| 2007 | 12'02" | 30.09.2007 | 233.0 | 358.0 |
| 2008 | 10'06" | 12.10.2008 | 185.0 | 310.0 |
| 2009 | 08'03" | 11.09.2009 | 131.0 | 256.0 |
| 2010 | 12'00" | 08.09.2010 | 225.0 | 350.0 |
| 2011 | 24'00" | 09.09.2011 | 975.0 | 1100.0 |
| 2012 | 24'00" | 16.09.2012 | 975.0 | 1100.0 |
| 2013 | 24'00" | 01.10.2013 | 975.0 | 1100.0 |
| 2014 | 24'00" | 13.09.2014 | 975.0 | 1100.0 |
| 2015 | 24'00" | 30.08.2015 | 975.0 | 1100.0 |
| 2016 | 24'00" | 07.09.2016 | 975.0 | 1100.0 |
| 2017 | 24'00" | 17.09.2017 | 975.0 | 1100.0 |
| 2018 | 17'04" | 29.10.2018 | 476.0 | 601.0 |
| 2019 | 24'00" | 08.09.2019 | 975.0 | 1100.0 |
| 2020 | 24'00" | 06.09.2020 | 975.0 | 1100.0 |
| 2021 | 24'00" | 18.11.2021 | 975.0 | 1100.0 |
| 2021 | 24'00" | Sept. 2022 | 975.0 | 1100.0 |

**Maximum Gauge = 24 Feet**
**Capacity in Mcft. = Live : 975.0/ Gross : 1100.0**

**पिछले 25 वर्षों में उदयसागर का जल स्तर** : विगत 25 वर्षों में इस झील ने 11 बार अपने अधिकतम् जल स्तर (24 फीट) पर पहुंचकर 1100 एमसीएफ जल का भण्डारण किया है। पिछले 11 वर्षों यानी वर्ष 2010 से 2021 के मध्य यह झील 10 बार छलकी। इस झील से काफी मात्रा में पानी बहकर वल्लभनगर बाँध को भरने में सहायक सिद्ध हुआ है।

**अभिव्यक्ति** : उदयसागर झील शहर से करीब 13 कि.मी. दूर स्थित है। कभी उदयसागर का पानी ठोकर चौराया (वर्तमान में राणाप्रताप नगर रेलवे स्टेशन तक) तक टकराता था। उदयपुर की प्रमुख झील फतहसागर व पिछोला के लबालब होने के बाद जो पानी छोड़ा जाता है, वह आयड़ नदी के माध्यम से उदयसागर में समाहित होता है। उदयपुर शहर के संस्थापक महाराणा उदयसिंह ने उदयसागर को मेवाड़ जल विभाजन रेखा से आने वाला समस्त जल संरक्षित करने के उद्देश्य से निर्मित किया था। उदयपुर शहर की जनसंख्या बढ़ती गई जिससे झीलों का पानी पेयजल के लिए उपयोग किया जाने लगा। इससे झीलें खाली होने लगी। जल स्तर सी–लेवल से भी नीचे जाने लगा, जिससे सीसारमा नदी, मदार नहर एवं बड़ी नाले से आने वाला पानी शहर की झीलों को भरने के लिए ही पर्याप्त रहता है एवं उदयसागर भरने के लिए आयड़ नदी में पर्याप्त जल का बहाव नहीं हो पाता है जिससे उदयसागर झील अधिकाशंतया रिक्त रहने लगी। उदयसागर झील रिक्त रहने से झील के रूण क्षेत्र और उसके आस–पास में गाँव बसते रहे, खेती का क्षेत्र बढ़ता रहा। आज इस झील के साथ लगे अनेक गाँवों एवं उसमें रहने वाले किसानों की यह मांग रहती है कि उदयसागर झील का पूर्ण भराव स्तर और अधिकतम् जल स्तर को घटाया जाये जिससे केचमेन्ट क्षेत्र में खेत एवं घर डूब क्षेत्र में नहीं आवे। ऐतिहासिक उदयसागर झील का निर्माण वर्षों पूर्व किया गया था। उस समय इसके पानी की निकासी के लिए दो गेट लगाये गये थे। ऐसे में अतिरिक्त पानी की आवक होने पर झील से पानी निकासी में भी परेशानी होती है। इसको देखते हुए झील के दो की जगह चार गेट लगाए जायेंगे। ये गेट पुराने गेट से बड़े होंगे, गेट से चैनल (मोरी) तक की चौड़ाई भी बढ़ाई जायेगी। बीच में आने वाली चट्टानों को व्यवस्थित कर वर्तमान में मौजूदा ऊँचाई से आठ फीट नीचे तक चार गेट बनाए जाएंगे। पास ही मौजूद मगरी को काटकर ओटा बनाया जाएगा।

बाँध में जल निकासी की ऊँचाई कम करने से उदयसागर के डूब क्षेत्र में आने वाले गाँवों के ग्रामीणों की जमीनें डूबने से शायद बच जायेगी तथा रियल स्टेट वालों को बस्तियाँ बसाने के लिए अधिक जमीनें मिल जायेगी। परन्तु प्रशासन, रियल स्टेट एवं ग्रामीणों को यह कार्य नहीं करना चाहिये तथा उदयसागर जल संरक्षण क्षमता को वर्तमान स्तर से बढ़ाने पर विचार करना चाहिये। उदयसागर झील एवं उसके आसपास के क्षेत्र पर उच्च स्तर पर विचार–विमर्श करते हुए नियोजन कर सिंगापुर एवं दुबई जैसे सुन्दर नगर की तर्ज पर एक नये शहर को बसाने का पर विचार किया जाना चाहिये। उदयसागर झील के तीन तरफ उच्च स्तर के बहु–मंजिला बिल्डिंग, व्यापारिक प्रतिष्ठान बने एवं आयड़ नदी का पूर्ण विकास हो। उदयपुर के समानान्तर एक सुन्दर शहर की संरचना हो। इसके अतिरिक्त उदयसागर में गन्दे पानी का समावेश नहीं होने की स्थिति में इसके जल से उद्योग एवं सिंचाई के साथ उदयपुर शहर की पेयजल की आपूर्ति भी संभव हो सकेगी।

अतः उदयसागर झील हमें विरासत में मिली सबसे महत्त्वपूर्ण एवं प्रथम झील है। यह पिछले काफी समय से उपेक्षित रही है। इस पर स्थित महल एवं मन्दिर खण्डहर होते चले गये। इसका उपयोग मात्र सिंचाई एवं हिन्दुस्तान जिंक के लिए ही सीमित रहा। इस पर नियमित रूप से अतिक्रमण होते रहे। इसके आकार को कम करने का प्रयास हुआ एवं वर्तमान में भी हो रहा है। विरासत में मिली इतनी विशाल एवं महत्त्वपूर्ण झील का निर्माण वर्तमान में संभव नहीं है, हमें केवल इसके विरासत में मिले स्वरूप को ही संरक्षित करना है। यह हमारी प्राथमिकता होनी चाहिये। वर्तमान में देवास–तृतीय एवं चतुर्थ की बातें तो बहुत होती हैं परन्तु उन्हें चरितार्थ कर पाना आर्थिक दृष्टि से काफी कठिन दिख रहा है। अतः हमें विरासत में मिली झीलों को संरक्षित करने पर अधिक ध्यान देना चाहिये। साथ ही सीवरेज के शुद्धीकरण उपरान्त प्राप्त स्वच्छ जल को पुनः आयड़ नदी में छोड़कर इसे वर्षभर भरा रखने पर भी चिंतन–मंथन किया जाना चाहिये।

सिंगापुर रिवरफ्रन्ट के कुछ दृश्य